

बीमा क्षेत्र में 2025 तक हर साल 2 लाख नौकरियों के अवसर

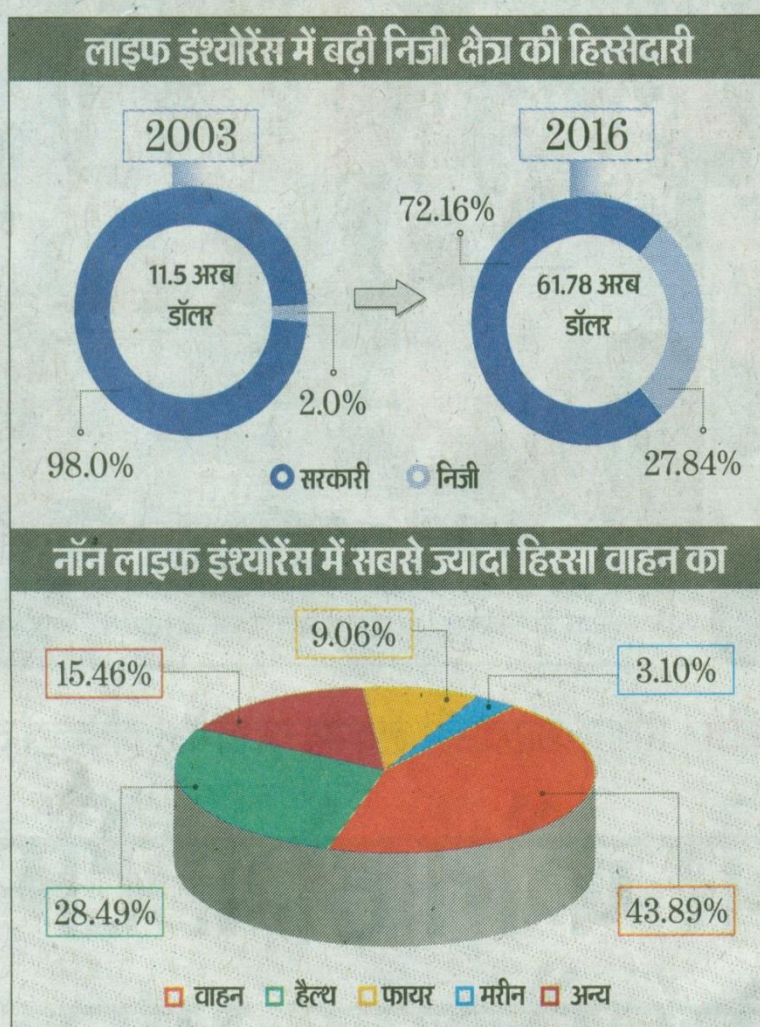
इंश्योरेंस इंडस्ट्री का शहरी क्षेत्रों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी विस्तार हुआ है। एक रिपोर्ट के मुताबिक 2016 के अंत तक लगभग 36 करोड़ लोगों के पास जीवन बीमा

पॉलिसी थी, जो देश की आबादी का करीबन 30% है। आने वाले दिनों में इसके विस्तार से ट्रेड प्रोफेशनल्स की मांग बढ़ने की संभावना है।

इंश्योरेंस इंडस्ट्री को कैरियर के लिहाज से एक बेहतर और सुरक्षित क्षेत्र माना जाता रहा है। इस क्षेत्र में नई कंपनियों के आने से इंश्योरेंस प्रोफेशनल्स की मांग बढ़ी है। हालांकि इसका एक महत्वपूर्ण कारण इंश्योरेंस का शहरी क्षेत्रों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तार होना भी है। कंफेडरेशन और इंडियन इंडस्ट्री के मुताबिक इंश्योरेंस सेक्टर में 2025 के अंत तक करीब 20 लाख नई नौकरियां मिलेंगी। यानी हर साल इस क्षेत्र में करीब 2 लाख नौकरियां मिलेंगी।

देश की इंश्योरेंस इंडस्ट्री में 53 कंपनियां हैं। इसमें से 24 कंपनियां लाइफ इंश्योरेंस और 29 नॉन लाइफ इंश्योरेंस के क्षेत्र में हैं। रिपोर्ट के अनुसार 2016 के अंत तक 36 करोड़ लोग जीवन बीमा के अंतर्गत थे, जो पूरी आबादी का लगभग 30 फीसदी है। 2015-16 के दौरान लाइफ इंश्योरेंस इंडस्ट्री में 22.55 फीसदी का विकास हुआ और इसने 20.34 अरब डॉलर का रेवेन्यू जनरेट किया। वहीं देश की नॉन लाइफ इंश्योरेंस इंडस्ट्री 2004 से 2016 के दौरान 12.1 फीसदी की सालाना दर से बढ़ी है। 2004 में इसका कुल मुनाफा 3.4 अरब डॉलर था, जो 2016 में बढ़कर करीब 13.35 डॉलर हो गया। ये आंकड़े बताते हैं कि इंश्योरेंस इंडस्ट्री में लगातार विकास हो रहा है। इसके कारण इस क्षेत्र में नौकरियों की संभावनाएं बढ़ेंगी।

इंश्योरेंस क्षेत्र में प्रोफेशनल्स को बीमाकन विभाग में काम करने का मौका मिल सकता है। यह विभाग किसी इंश्योरेंस कंपनियों के लिए नई पॉलिसी बनाने और वर्तमान पॉलिसी में समय-समय में बदलाव करने का काम करता है। इस विभाग की जिम्मेदारी होती है कि वह लाइफ और जनरल इंश्योरेंस बिजनेस की डिजाइनिंग व पॉलिसी की



प्राइजिंग तय करें। अंडरराइटर का काम इंश्योरेंस कंपनी के जोखिम को कम करना है। यह विभाग जांच करता है कि किसी व्यक्ति को पॉलिसी दी जाए या नहीं। मार्केटिंग के लिए स्पेशलाइज्ड डिग्री की आवश्यकता होती है। यहां तक कि अब एजेंट्स की भूमिका भी बदलने लगी है और वे इंश्योरेंस सॉल्यूशन देने के साथ ही वित्तीय सलाहकार के रूप में भी काम करने लगे हैं। ऐसे कई इंस्टीट्यूट हैं, जो मार्केटिंग में स्पेशलाइज्ड कोर्स कराते हैं।

आईआरडीए द्वारा आयोजित परीक्षा करनी होगी क्लियर

12वीं की परीक्षा पास करने के बाद इंश्योरेंस इंडस्ट्री में कैरियर बनाया जा सकता है। इसके लिए छात्रों को प्रशिक्षण लेना होगा और फिर भारतीय बीमा विनियामक प्राधिकरण द्वारा आयोजित परीक्षा क्लियर करनी होगी। लेकिन बैचलर डिग्री करने के बाद इंश्योरेंस इंडस्ट्री में बेहतर अवसर मिल सकते हैं। हालांकि संबंधित स्ट्रीम से डिग्री करने

वालों को वरीयता मिलती है। इसके लिए छात्र इंश्योरेंस एंड रिस्क मैनेजमेंट कोर्स कर सकते हैं। अधिकांश संस्थानों में यह कोर्स पोस्टग्रेजुएट स्तर पर मौजूद है। किसी भी स्ट्रीम से बैचलर डिग्री करने के बाद छात्र इंश्योरेंस एंड रिस्क मैनेजमेंट के पोस्टग्रेजुएट डिप्लोमा या एमबीए कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं। मैथ्स, स्टैटिस्टिक्स, इकोनॉमिक्स या कॉमर्स से डिग्री लेने वाले छात्रों के लिए इस फील्ड में एंट्री हासिल करना आसान हो सकता है।

विभिन्न विभागों में हैं मौके

प्रोफेशनल्स के लिए विभिन्न बीमा कंपनियों में जॉब के अच्छे अवसर मौजूद हैं। इस क्षेत्र में प्रोफेशनल मार्केट, एक्चुअरी, अंडरराइटिंग और ऑपरेशन डिपार्टमेंट में जॉब कर सकते हैं। इसके अलावा इन कंपनियों में मार्केटिंग और डिस्ट्रीब्यूशन डिपार्टमेंट में भी प्रोफेशनल्स के लिए नौकरियों की संभावनाएं हैं। सरकारी बीमा कंपनियों में डेवलपमेंट ऑफिसर के पद पर प्रवेश परीक्षा के जरिये नियुक्ति होती है।

एक्चुअरी में कमाई ज्यादा

बीमा एजेंट की कमाई काफी हद तक उनके द्वारा बेची जा रही पॉलिसी पर निर्भर रहती है। मार्केटिंग और सेल्स में फ्रेशर को प्रति माह 20 से 22 हजार रुपए प्रति माह मिलने की संभावना होती है। अंडरराइटर्स का शुरुआती पैकेज 5 से 6 लाख रुपए सालाना होता है। इंश्योरेंस मैनेजमेंट का कोर्स कर एंट्री लेने वाले युवाओं को 3 से 4 लाख रुपए सालाना तक का पैकेज मिल सकता है। एक्चुअरी प्रोफेशनल्स को शुरुआत में ही सालाना 7 से 8 लाख रुपए का पैकेज मिलने की संभावना होती है।